# दो शब्द

**'ज्ञानवानेन सुखवान् ज्ञानवानेव जीवति।**
**ज्ञानवानेव बलवान् तस्मात् ज्ञानमयो भव।।'**

'ज्ञानविविधा' का यह प्रवेशांक लंबी प्रतीक्षा के उपरांत आप सभी विद्वतजनों को अर्पित करते हुए मुझे विशेष प्रसन्नता और संतुष्टि हो रही है।

साहित्य का विद्यार्थी हूँ और जब से साहित्य का विद्यार्थी हुआ,तभी से ये प्रबल इच्छा थी कि साहित्य के प्रचार-प्रसार हेतु कुछ किया जाए। साहित्यिक उन्नयन में कुछ सार्थक योगदान देने की कोशिश की जाए। वर्तमान में साहित्यिक या सामाजिक किसी भी क्षेत्र में आप देखें तो वहाँ बाजारवाद हावी दिखता है। विभिन्न साहित्यिक आयोजनों, प्रकाशनों और साहित्यिक सम्मानों का दौर आप अक्सर देखते हैं, जहाँ साहित्य और सम्मान का व्यवसायीकरण अपने चरम पर है। इसके लिए सिर्फ कुछ आयोजक या प्रकाशक ही जिम्मेदार नहीं हैं, अपितु बहुत हद तक हमारी बिना योग्यता बड़ा साहित्यिक,सम्मान प्राप्तकर्ता बनने की ललक है। वर्तमान समय में पुस्तकें और पत्रिकाएँ लोग कम ही पढ़ना पसंद करते हैं, लेकिन सोशल मीडिया पर बेमतलब भी बहुत वक्त देते हैं, जिसका सामान्यतः उनको फायदा कम, ज्यादातर नुकसान ही होता है। इस कारण वहाँ साहित्यिक ठगी के भी बहुत सारे प्रकरण अक्सर देखने को मिलते हैं। उदाहरण के लिए- साझा संकलन प्रकाशन, विभिन्न साहित्यिक सम्मान इत्यादि के नाम पर अच्छा-खासा पैसा लोग बना लेते हैं। इसके ज्यादातर शिकार होते हैं सुदूर,कम विकसित क्षेत्र से समबन्धित और नवोदित साहित्यिक लोग। साथ ही तुरत-तुरत और सस्ती लोकप्रियता की चाहत भी इस साहित्यिक ठगी का प्रमुख कारण है।

सोशल मीडिया पर बहुत अच्छी-अच्छी रचनाएँ भी यत्र-तत्र उपलब्ध हैं,लेकिन सुधीजनों और पाठकों की पहुँच से दूर। उचित मंच नहीं मिलने के कारण अच्छी रचनाएँ और रचनाकार भी कुछ थोड़े से लाइक और कमेंट से संतुष्ट होकर शिथिल हो जाते हैं। ऐसी श्रेष्ठ साहित्यिक रचनाओं और रचनाकारों को एक मंच पर लाकर सुधीजनों/पाठकों को उपलब्ध करवाया जाए, ये इच्छा धीरे-धीरे बलवती होती गई और इसी कड़ी में मेरी माँ स्व. पूनम देवी के आशीर्वाद और सहधर्मिणी श्रीमती अनुभा चौधरी के सहयोग और समर्थन से 'ज्ञानविविधा'(gyanvividha.com) के नाम से साहित्य संचयन को समर्पित वेबसाइट प्रारंभ किया था, जिसका उद्देश्य मुख्यतः भारतीय साहित्य, संस्कृति और ज्ञान के विविध विमर्शों/रचनाओं को ऑनलाइन माध्यम से एक मंच देना था, ताकि, नवोदित और श्रेष्ठ कृतियों को एक स्थान पर उपलब्ध कराया जा सके और सुधीजनों और प्रबुद्ध पाठकों तक निःशुल्क इसकी पहुँच सुनिश्चित हो सके। इसी क्रम में इच्छा थी कि एक पत्रिका भी प्रकाशित की जाए, जहाँ श्रेष्ठ रचना,आलोचना और शोध की त्रिवेणी सरलता से सर्वसुलभ हो सके। यह प्रयास आपके समक्ष ज्ञानविविधा ऑनलाइन पत्रिका के रूप में प्रस्तुत है।

'ज्ञानविविधा' (ऑनलाइन-त्रैमासिक पत्रिका) समकालीन साहित्य विमर्श और रचनाशीलता को समर्पित है, जो शैक्षिक-साहित्यिक दृष्टिकोण से रचना,आलोचना और शोध के विविध दृष्टिकोण और समसामयिक तथा सामाजिक-सांस्कृतिक महत्त्व के विषयों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने का एक प्रयास है। इस पत्रिका का प्रकाशन जनवरी 2024 (प्रवेशांक) से प्रारम्भ किया जा रहा है। वर्तमान में इसका स्वरूप ऑनलाइन रखा गया है, किन्तु, भविष्य में यह आपके सम्मुख

ऑनलाइन और प्रिंट, दोनों माध्यमों में उपलब्ध होगी। साथ ही हमारा प्रयास है कि इसे पूर्णतः निःशुल्क प्रकाशित किया जाए और श्रेष्ठ रचनाओं को स्थान दिया जाए।

इस पत्रिका के प्रकाशन की योजना जिन कुछ प्रमुख व्यक्तित्त्वों के आशीर्वाद और सहयोग से सफलीभूत हो सकी, उनमें कुछ प्रमुख उल्लेखनीय नाम हैं-मेरी स्वर्गवासी माँ -पूनम देवी, पापा -श्री रामनरेश चौधरी, विद्वत गुरुजनों-डॉ. सतीश कुमार राय, सम्प्रति- प्राध्यापक एवं संकायाध्यक्ष-मानविकी, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, डॉ. कल्याण कुमार झा, प्राध्यापक, विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, डॉ. दशरथ प्रजापति, प्राध्यापक एवं प्राचार्य, जगन्नाथ सिंह महाविद्यालय, चंदौली, सीतामढ़ी, डॉ. वीरेंद्र नाथ मिश्र, विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर और डॉ. रवीन्द्र उपाध्याय, पूर्व प्राध्यापक, विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, श्री विनोद कुमार झा (सेवानिवृत प्रधानाध्यापक) और सहधर्मिणी- श्रीमती अनुभा चौधरी, जो किसी भी परिस्थिति में मेरे साथ मजबूती से खड़ी और हौसला अफजाई करती रही हैं और विद्वान् साथियों- डॉ. आरले श्रीकांत लक्ष्मणराव, सहायक प्राध्यापक- हिंदी विभाग, ओड़िशा केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट, डॉ. उमेश कुमार शर्मा, सहायक प्राध्यापक सह अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, श्री राधा कृष्ण गोयनका महाविद्यालय, सीतामढ़ी और श्रीमती कंचन कुमारी, सहायक प्राध्यापक- हिन्दी विभाग, श्री राधा कृष्ण गोयनका महाविद्यालय, सीतामढ़ी।

इस पत्रिका से संबद्ध सभी व्यक्ति इस पत्रिका के मानक और साहित्यिक गरिमा को बनाए रखते हुए निरंतर प्रकाशन हेतु दृढ़ संकल्पित हैं। इस पत्रिका में शोधालेख,समीक्षा के साथ ही साहित्य की किसी भी विधा में रचनाएँ प्रकाशित हो सकती है। इसके अलावा अन्य विषयों के भी श्रेष्ठ आलेख, सामाजिक सन्दर्भों से सम्बंधित रचनाएँ इसमें प्रकाशित होंगी। साथ ही हमारा प्रयास होगा कि इस पत्रिका के माध्यम से लोकहित, समसामयिक, सांस्कृतिक और वर्तमान संदर्भो में प्रासंगिक रचनाशीलता को और बढ़ावा मिल सके।

हमें विश्वास है कि रचनात्मक विविधता को समर्पित यह अंक आपको अवश्य पसंद आएगा । मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप सभी विद्वतजनों के सहयोग,समर्थन और परामर्श से ज्ञानविविधा पत्रिका हिन्दी भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में यथाशक्ति/यथोचित योगदान देते हुए अपना विशेष स्थान बना सकेगी। मेरी कोशिश होगी की आप सबों की अपेक्षाओं पर खरा उतर सकूँ। आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी। आशा है आप सभी विद्वानों, साहित्यकारों का स्नेह हमें निरंतर प्राप्त होगा। अस्तु। इति शुभम।

**डॉ. दिवाकर चौधरी**
प्रधान संपादक